International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 53-54

पण्डित अटल बिहारी वाजपेयी की ग्रहण रचनाओं में साहित्यिक अनुशीलन

डॉ0 नरेन्द्र सरिया
(अतिथि विद्वान), शासकीय महाविद्यालय, टोकखुर्द, देवास, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानव के मनोभावों को लोल लहरें जब अन्तर्जगत् के सत्य को बाह्य जगत् के सत्य से एकात्मता की परिधि में ले आती हैं, तो संवेदना का उद्भव स्वतः होता है और तभी साहित्य की सर्जना होती है। साहित्य में भाषा का सुसंगठित रूप अत्यन्त आवश्यक होता है। सुगठित भाषा के अभाव में साहित्य की सृष्टि असम्भव है मनुष्य की रागात्मिका वृत्ति ही उसे सर्जना की ओर उन्मुख करती है। राग को मानव की प्रमुख प्रवृत्ति माना गया है। राग ही तो संवेदना और सहानुभूति का प्रधान अंग है। यह राग ही मनुष्य को साहित्य–सृष्टि द्वारा श्रेय एवं प्रेय को विकसित करने की प्रेरणा देता है। अटल जी का साहित्य भी श्रेय–प्रेय का विकास करता हुआ यही प्रधान स्वर मुखरित करता है ''मेरे प्रभु गैरों को गले न लगा सकूँ, इतनी रूखाई कभी मत देना'' इसी को सहानुभूति कहते हैं। यही संवेदनात्मक स्वानुभूति अटल जी के गद्य–पद्य में 'सत्य' के रूप में प्रकट हुई है। इस 'सत्य की अभिव्यक्ति उनकी वाणी में सदैव स्वतः स्फुरित होती रहती है।

अटल जी के गद्य में मानवता का पथ प्रशस्त करने वाले विचार हैं। जो हृदय और मस्तिष्क दोनों को समन्वित करते हैं।

जहाँ उनके अकाट्य तर्क होते हैं। वहीं विनोदिली उक्तियाँ भी मिलती हैं। उनके लेखन की यह विशेषता है कि उसमें जीवन के इन्द्रधनुष के सप्त रंग उभरकर पाठकों को सम्मोहिनावस्था में ले आते हैं। उनकी लेखन शैली वैसी ही है, जैसे चमेली के सुमनों की सुगन्धि। किसी को बताना नहीं पड़ता कि यहाँ चमेली फूली है सुगन्धि। स्वतः बता देती है ऐसा ही कुछ अटल जी की शैली में है। एक अनुच्छेद पढ़ने के बाद पाठक स्वतः कह उठता है। वह अटल जी की रचना लगती है। अपने सम्पादन काल में उन्होंने साहित्य, संस्कृति और राष्ट्रीयता से सम्बन्धित जो लेख और सम्पादकीय लिखे हैं उनमें उनका निजी सोच, निजी चिन्तन, निजी विचार और निजी शैली देखने को मिलती है। संस्कृति परक अपने लेखों में वे भावुक होकर गद्य को पद्य का जैसे रच देते हैं। राजनीति सम्बन्धी लेखों में वे अकाट्य तर्क प्रस्तुत करते हैं। राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत उनके निबन्ध अतीत की बिम्बात्मक झाँकियाँ उपस्थित करते हैं। वे अपने गद्य में एक भी निरर्थक वाक्य नहीं आने देते। उनका गद्य जल्दी में नहीं लिखा गया है। एक–एक वाक्य बहुत ही सोच–समझकर लिया गया है। संस्कृत साहित्य का अध्ययन होने के कारण उनकी शब्द सम्पदा का भण्डार पर्याप्त विस्तृत है।

राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम

अटल जी के गद्य में राष्ट्रीय भावनाओं का उदात्त स्वरूप पढ़ने को मिलता है। वे राष्ट्र के लिए जीते हैं उनके हृदय की प्रत्येक धड़कन में राष्ट्र प्रेम धड़कता है। राष्ट्र की सेवा में जीवन दान दिया है वे भारत की मान–मर्यादा को सदैव उच्चतम शिखर पर आसीन करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। वे भारत को जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं मानते हैं वे लिखते हैं–

''भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। हिमाचल इसका मस्तक है। गौरीशंकर शिखा है। कश्मीर किरीट है। पंजाब और बंगाल दो विशाल कन्धे हैं। विन्ध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघाएँ हैं। कन्याकुमारी इसके चरण हैं। सागर इसके पग पखारता है। पावस के काले–काले मेघ इसके कुन्तल केश है चाँद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं। यह वन्दन की भूमि है। अर्पण की भूमि है। इसका कंकर–कंकर शंकर है। इसका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है। हम जीएँगे तो इसके लिए, मरेंगे तो इसके लिए।''

वास्तव में अटल जी भारत के लिए ही जी रहे हैं। उनका एक–एक क्षण राष्ट्र सेवा में बीत रहा है। वे भारत की जनता को अपना आराध्य मानते हैं। वे लिखते हैं–

''समूचा भारत हमारी निष्ठा का केन्द्र और हमारा कार्यक्षेत्र है। भारत की जनता हमारी आराध्य है। हमें अपनी स्वाधीनता को अमर बनाना है, राष्ट्रीय अखण्डता को अक्षुण्ण रखना है और विश्व में स्वाभिमान और सम्मान के साथ जीवित रहना है। इसके लिए हमें भारत को सुदृढ़, शक्तिशाली और समृद्ध राष्ट्र बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो साधन आवश्यक होगा हम अपनाएँगे जो नीति उपयोगी होगी उसका अवलम्बन करेंगे जो कार्यक्षेत्र हिता वह होगा उसका निर्धारण तथा कार्यान्वयन करेंगे।''

अटल जी ने अपने निबन्धों में राष्ट्रीयता की जो सरिता प्रवाहमान की है। कोई अभागा देशवासी ही होगा जिसे वह भावविभोर न करती हो। उनका राष्ट्रप्रेम वाक्य–वाक्य के शब्द–शब्द में जन्मभूमि के प्रति जिस श्रद्धा भावना को भरता है। उसे उनके लेखन की सफलता माना जाना चाहिए।

अटल जी की सदैव यही कामना रहती है कि हमारे राष्ट्र का मस्तक ऊँचा रहे इसके लिए वे जवानों का हृदय से अभिनन्दन में अत्यन्त भावुक हो जाते हैं।

उनकी खूबी यह है कि वे जो कुछ अनुभव करते हैं उनको अभिव्यक्ति देने में भी पूर्ण समर्थ है। एक रात उस जवान का फोन आया शीर्षक अपने निबन्ध का प्रारम्भ वे जिन शब्दों से करते हैं उनमें उनका राष्ट्रप्रेम स्पष्टतः झलकता है।

''आज किसी का अभिनन्दन होना चाहिए तो सेना के उन जवानों का अभिनन्दन होना चाहिए जिन्होंने अपने रक्त से विजय की गाथा लिखी है। हमारी सेना ने हमारे इतिहास को बदला है और भूगोल को भी परिवर्तित किया है। एक ही प्रहार में इतिहास बदल गया और भूगोल डोल गया। स्वाभाविक रूप से हम उन शहीदों के प्रति हमारी विजय का सर्वाधिक श्रेय अगर किसी को दिया जा सकता है तो हमारे बहादुर जवानों को और उनके कुशल सेनापतियों को।''

एक सच्चे राष्ट्रवादी विचारक के रूप में वे देश के सभी लोगों को यह चेतावनी देते हैं कि युद्ध में जवानों की विजय को वोटों की राजनीति से सर्वथा अलग रखा जाए एक स्थल पर उन्होंने लिखा है।

''कोई भी दल जवानों के रक्त की कीमत वोटों के रूप में भुगतान करने की कोशिश न करे। इस विजय को दलगत स्वार्थ के लिए प्रयुक्त मत कीजिए। यह सभी के लिए गौरव की वस्तु है। वस्तुस्थिति बदली है। इस वस्तुस्थिति के परिवर्तन की प्रक्रिया में सारा राष्ट्र शामिल है।''

अटल जी जब भारतीयकरण की बात करते हैं तो वे अतीत से वर्तमान तक के फलक को अपने सामने रखते हैं, अपने भारतीयकरण निबन्ध में वे राष्ट्रीय जीवनधारा की बात बहुत स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करते हैं।

''अनादिकाल से भारत अनेक जातियों तथा जीवन–प्रवाहों का सम्बल रहा है। संघर्ष के माध्यम से ये विभिन्न जातियाँ भारत में इस तरह से घुलमिल गई हैं कि इनको आज अलग–अलग नहीं किया जा सकता। छोटी–छोटी जलधाराओं को अपने में समेटकर भारत की राष्ट्रीय जीवनधारा अविच्छिन्न बहती रही है।

अटल जी भारतीयता के स्वर को जिस ओजस्विता और तेजस्विता के साथ अपनी कविताओं में करते हैं। उसी तेवर के साथ वे अपने गद्य में भी प्रकट करते हैं। वे 'अपनेपन' को खोना नहीं चाहते क्योंकि हमारे स्वर्णिम अतीत ने विश्व को जो कुछ दिया है वह शब्दातीत है। वे नहीं चाहते कि हम आधुनिकता के मोह में पढ़कर अपने निजत्व को गवां बैठे। हमारा अपनापन ही तो हमारी पहचान है। हमारी ख्याति है। हमारी धरोहर है वे नहीं चाहते कि दुनिया की चकाचौंध के मोह में फँसकर हम अपनी धरोहर को खो दे, उससे हाथ धो बैठे। वास्तव में धरोहर के बिना कोई भी राष्ट्र कंगाल माना जाता है। अटल जी राष्ट्र को कंगाली के गर्त में ढकेलने वालों को सावधान करते हुए लिखते हैं।

''भारतीयकरण आधुनिकीकरण का विरोधी नहीं है। न भारतीयकरण एक बँधी–बँधाई परिकल्पना है। हमें भारत को आधुनिक राष्ट्र का रूप देना है किन्तु आधुनिकता की होड़ में हम अपनेपन को भुला न दे, इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।''

भारतीयकरण हमारे जीवन और जागरण का प्रमाण है। यह हमारी गतिशीलता और विकास का द्योतक है। यह इस संकल्प का उद्घोषक है कि हम अपने उज्जवल अतीत से प्रेरणा लेकर उज्जवतर भविष्य का निर्माण करने के लिए सतत् संघर्षशील है।

लेखक ने अपने एक लेख में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि स्वतंत्रता के बाद हमने जनमानस में राष्ट्रीयधारा की पावन गंगा नहीं प्रवाहित की। राष्ट्रवाद की ओर से हम उससे मुँह मोड़ रही है। हम वोटवाद के सम्मोहन में ऐसा उलझ गए हैं कि राष्ट्रवाद को बिल्कुल ही भुला बैठे। वे लिखते हैं–

''यदि हम भी प्रखर राष्ट्रभाव को हमारे सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में सरलता व प्रामाणिकता पर बल देते और व्यक्ति–व्यक्ति की कर्म चेतना को नियोजित रूप में राष्ट्र निर्माण में लगा सकते, तो हम चीन को हर क्षेत्र में विशेषतः आर्थिक और सैनिक क्षेत्र में मात दे सकते थे।''

हिन्दू धर्म की गौरव–गरिमा

अटल जी ने अपने कई निबन्धों में हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में चिन्तनपरक विचार व्यक्त किए हैं। वे हिन्दू होने में गर्वानुभूति करते हैं। ''मैं एक हिन्दू हूँ जिसे हिन्दू होने पर सुख अनुभव होता है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''मैं हिन्दू हूँ जिसे अपने हिन्दुत्व पर गर्व है। ''ऐसी दृढ़ आस्था अडिग विश्वास और अचल संकल्प वाले रचनाकार के हृदय में अपने धर्म के प्रति जो अटूट श्रद्धा मिश्रित निष्ठा है पर अटल है। वे हिन्दू धर्म को विश्व का विकासमान धर्म बताते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मेरी इक्यावन कविताएँ–अटलबिहारी वाजपेयी, किताब घर नई दिल्ली संपादक चंद्रिका प्रसाद शर्मा, प्रथम संस्करण 28 अप्रैल 2000।
2. क्या खोया क्या पाया–सम्पादक कन्हैयालाल नन्दन।
3. अटलजी के पचहत्तर पड़ाव–डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा।
4. चुनी हुई कविताएँ–अटलबिहारी वाजपेयी।
5. मृत्यु या हत्या–अटलबिहारी वाजपेयी।